गुनाहगार औरतें

बे परदगी

ज़बान दराज़ी

नाजाइज़ तअल्लुक़ात

दीन का मज़ाक

चुग़ली करना

अहसान जतलाना

लेखक

हज़रत मौलाना मुफ़ती अब्दुर्रहमान सखरवी

छः

गुनाहगार औरतें

लेखक

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रऊफ़ साहब सुखरवी

अनुवादक

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़ नगरी

न्यू ताज ऑफिस

3095, सर सैयद अहमद रोड, दरिया गंज,

नई दिल्ली-110002, फोन : 011-23266879

✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡

नाम किताब	:	छः गुनहगार औरतें
लेखक	:	हज़रत मौलाना मुफ्ती अबदुर्रउफ साहब सक्खरवी
तायदाद	:	1100
प्रकाशन वर्ष	:	जनवरी 2005
हदिया	:	9/-

><><><><><><><><><><><

प्रकाशक

न्यू ताज ऑफिस

3095, सर सैय्यद अहमद रोड,

दरिया गंज, दिल्ली-2

फोन : 011-23266879

विषय सूची

क्या? कहां

औरतों के मुतअल्लिक़ बयान 6
रसूलुल्लाह सल्ल० का रोना 7
उम्मत पर रसूलुल्लाह सल्ल० की शफ़्क़त 8
छः तरीक़ों से अज़ाब 8
पहली औरत के अज़ाब का सबब बे "परदगी" 10
"सतर" और परदा 11
परदा और सतर में फ़र्क़ 12
घर के अन्दर रहने वाले नामेहरम 13
मर्दों से परदा करने का तरीक़ा
अज़ाबे क़बर का इब्रत नाक वाक़िआ 15
बे परदगी की सख़्त सज़ा 18
लिपिस्टिक लगाने की सज़ा 18
नाख़ुन पालिश लगाने पर अज़ाब 19
मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना 20
बे परदगी की वजह से दोज़ख़ का अज़ाब 21
दूसरी औरत पर अज़ाब का सबब "ज़बान दराज़ी" 23
ज़बान दराज़ी संगीन (बड़ा) गुनाह है 24
तीसरी औरत पर अज़ाब का सबब "नाजाइज़ तअल्लुक़ात" 25

बे हयाई के संगीन (बुरे) नतीजे.......... 25
बाप और बेटी के दरमियान हया का परदा.......... 26
टी०वी० का वबाल.......... 27
टी०वी० हया (शर्म) साफ़ करने का उस्तरा है.......... 28
चोथी औरत पर अज़ाब का सबब "इस्तिहज़ा" (मज़ाक़).......... 29
गुस्ले फ़र्ज़ में ताख़ीर (देर) करने की हद.......... 29
देर से सोने की नहूसत.......... 30
माहवारी से पाकी पर फ़ौरन गुस्ल.......... 31
अज़ाब का सबब "नमाज़ का इस्तिहज़ा" (मज़ाक़).......... 32
पाँचवी औरत पर अज़ाब का सबब "चुग़ली".......... 33
ग़ीबत और चुग़ली में फ़र्क़.......... 34
एक चुग़ल ख़ोर का क़िस्सा.......... 35
घर के अफ़राद में चुग़ली.......... 38
अज़ाब का सबब झूट बोलना.......... 39
तीन तरह के अफ़राद पर क़ियामत के दिन अज़ाब.......... 39
झूटी क़सम खाने वाला.......... 40
झूट का रिवाज आम.......... 41
छटी औरत पर अज़ाब का सबब "एहसान जतलाना".......... 42
एहसान जतलाने का मतलब.......... 43
अज़ाब का दूसरा सबब "हसद करना".......... 44
"हसद" का मतलब.......... 45
खुलासा.......... 45

छः

गुनाह गार औरतें

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ نَحۡمَدُهٗ وَنَسۡتَعِيۡنُهٗ وَ نَسۡتَغۡفِرُهٗ
وَنُؤۡمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيۡهِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنۡ شُرُوۡرِ
اَنۡفُسِنَا وَ مِنۡ سَيِّئَاتِ اَعۡمَالِنَا مَنۡ يَّهۡدِهِ اللّٰهُ فَلَا
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَ نَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ عَلٰى اٰلِهٖ وَ
اَصۡحَابِهٖ وَبَارَكَ وَ سَلَّمَ تَسۡلِيۡمًا كَثِيۡرًا۔
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ،
بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ.
اِنَّ الۡمُسۡلِمِيۡنَ وَالۡمُسۡلِمَاتِ وَالۡمُؤۡمِنِيۡنَ
وَالۡمُؤۡمِنَاتِ وَالۡقَانِتِيۡنَ وَالۡقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِيۡنَ

وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِيْنَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِيْنَ
وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصَّآئِمَاتِ وَالْحَافِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ
وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذَّاكِرَاتِ
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

صدق اللّٰه العظيم ۔ (الاحزاب آیت ۳۵)

औरतों के मुतअ़ल्लिक़ बयान

मेरे क़ाबिले एहतिराम बुज़ुर्गो। हमारी यह मज्लिस दो हिस्सों पर मुश्तमिल होती है। एक मर्दों पर और दूसरे औ़रतों पर क्यों कि औ़रतें भी इस मजिलस में शिर्कत फ़रमाया करती हैं और उन के लिए मर्दों से अलग पर्दे के साथ मज्लिस की बातें सुन्ने का इन्तिज़ाम किया जाता है। यही वजह है कि इस मज्लिस में जो बयान होता है, वह उ़मूमन मर्दों और औ़रतों दोनों से मुतअ़ल्लिक़ होता है। लेकिन कभी कभी कोई बयान ख़ास तौर पर औ़रतों की ज़रूरत के लिए मख़सूस होता है। और कभी कोई बयान सिर्फ़ मर्दों की ज़रूरत का होता है। बहर हाल आज की मज्लिस में रसूलुल्लाह सल्ल० की एक हदीस बयान करने का इरादा है, जो औ़रतों से मुतअ़ल्लिक़ है और उन के साथ ख़ास है। अगरचे इस हदीस में जो बातें औ़रतों से

मुतअ़ल्लिक़ बयान की गई हैं वे मर्दों में भी पाई जा सकती हैं। इस लिए अगर किसी मर्द में वे बातें मोजूद हों तो उसका वही हुक्म होगा जो औ़रतों के लिए इस हदीस में बयान किया गया है। इस लिए यह हदीस औ़रतों के साथ मर्दों के लिए भी मुफ़ीद है।

रसूलुल्लाह सल्ल० का रोना

यह हदीस बहुत अहम बातों पर मुश्तमिल है, इस हदीस को हाफ़िज़ शमसुद्दीन ज़हबी रह० ने अपनी मशहूर किताब "अल-कबाइर" में नक़ल किया है। इस हदीस का खुलासा यह है कि एक बार हज़रत अ़ली रज़ि० और हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० से मिलने के लिए आप सल्ल० के घर तशरीफ़ लाए हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुऐ तो देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल० रो रहे हैं। जब मैं ने नबी करीम सल्ल० की यह हालत देखी तो अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों, आप सल्ल० को किस चीज़ ने रूलाया है? और किस वजह से आप सल्ल० इतना रो रहे हैं। आप सल्ल० ने जवाब में फ़रमाया "मैं ने मेअ़्राज की रात में अपनी उम्मत की औ़रतों को दोज़ख़ के अन्दर तरह तरह के अ़ज़ाबों में मुब्तला देखा और उन को जो अ़ज़ाब

हो रहा था वह इतना शदीद और ख़तरनाक था कि उस अ़ज़ाब के तसव्वुर से मुझे रोना आ रहा है।

उम्मत पर रसूलुल्लाह सल्ल० की शफ़्क़त

सरकारे दो आ़लम सल्ल० की अपनी उम्मत पर इतनी शफ़्क़त है कि हम उस का अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते। जैसे एक बहुत ही मेहरबान और करम फ़रमा माँ जो अपनी औलाद पर जान क़ुर्बान कर देने वाली हो। अगर वह अपनी औलाद को जैल के अन्दर सख़्त क़िस्म की सज़ाऐं सहते हुए देखे तो यक़ीनन उस माँ का कलेजा मुंह को आ जायेगा। और उन सज़ाओं को देख कर वे माँ बाप यक़ीनन रो पड़ेंगे और रसूलुल्लाह सल्ल० की शफ़्क़त और मुहब्बत तो सारी दुनिया की माओं से कहीं ज़्यादा बढ़ कर है, इस लिए आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं ने अपनी उम्मत की औरतों को जब दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला पाया, इस की वजह से मुझे रोना आ राह है कि मेरी उम्मत की औ़रतों पर इस तरह का दर्द नाक अ़ज़ाब होगा।

छ: तरीक़ों से अ़ज़ाब

इस के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस की वज़ाहत फ़रमाई कि मैं ने दोज़ख़ के अन्दर औ़रतों को किस किस तरह अ़ज़ाब में मुब्तला देखा चुनान्चे आप सल्ल० ने

2) फ़रमाया :

(१) " मैं ने एक औ़रत को देखा कि वह अपने बालों के ज़रीये दोज़ख़ के अन्दर लट्की हुई है और उस का दिमाग़ हन्डिया की तरह पक रहा है" ।

एक तो ख़ुद दोज़ख़ के अन्दर होना बज़ाते ख़ुद कितना दर्दनाक अ़ज़ाब है, अल्लाह तआ़ला हम सब को अपनी पनाह में रखे । आमीन

और फिर बालों के ज़रीये लटकना यह बहुत तकलीफ़ देने वाली सज़ा है, और फिर दिमाग़ का पकना यह तीसरी सज़ा है । फिर फ़रमाया :

(२) " मैं ने दूसरी औ़रत को दोज़ख़ में इस तरह देखा कि वह ज़बान के बल लटकी हुई है" ।

अब आप अन्दाज़ा करें किसी की ज़बान खींच कर और निकाल कर उस के ज़रीये उस के पूरे जिस्म को लटकाया जाये तो उस में कितनी सख़्त तकलीफ़ है । अगर सिर्फ़ एक हाथ के ज़रीये भी किसी को लटकाया जाये तो वही उस के लिए मौत से भी बुरा है ज़बान तो बहुत नाज़ुक चीज़ है ।

(३) "तीसरी औ़रत को मैंने देखा कि वह छातियों के बल दोज़ख़ में लटकी हुई है" ।

(४) "चोथी औ़रत को मैं ने इस तरह देखा कि उस के

दोनों पैर सीने से बंधे हुये थे और उस के दोनों हाथ पैशानी से बंधे हुये थे"।

(५) "पाँचवी औ़रत को मैं ने इस हालत में देखा कि उस का चेहरा सुव्वर की तरह है, और बाक़ी जिस्म गधे की तरह है, मगर हक़ीक़त में वह औ़रत है, और साँप बिच्छू अस को लिपटे हुये हैं"।

(६) "छटी औ़रत को मैं ने इस हालत में देखा कि वह कुत्ते की शकल में है और उस के मुंह के रास्ते से दोज़ख़ की आग दाख़िल हो रही है और पाख़ाने के रासते से आग निकल रही है और अ़ज़ाब देने वाले फ़रिश्ते दोज़ख़ के गुर्ज़ उस को मार रहे हैं"।

इस तरह छः औ़रतों को होने वाले अ़ज़ाब की तफ़्सील रसूलुल्लाह सल्ल० ने बयान फ़रमाई।

पहली औ़रत के अ़ज़ाब का सबब "बे परदगी"

इस के बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि ने अ़र्ज़ किया कि "अब्बा जान इन औ़रतों पर यह अज़ाब उन के कोनसे आमाल की वजह से हो रहा था, इन के कौन से ऐसे आमाल थे जिन की वजह से आप सल्ल० ने इन को इस दर्द नाक और होल नाक अ़ज़ाब में मुब्तला देखा" ?

इस के जवाब में आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि "जिस औ़रत को मैं ने सिर के बालों के ज़रीये दोज़ख़ में

लटका हुआ देखा और जिस का दिमाग़ हन्डिया की तरह पक रहा था, उस को यह अ़ज़ाब घर से बाहर नंगे सिर जाने की वजह से हो रहा था, वह औ़रत ना मेहरम मर्दों से अपने सिर के बाल नहीं छुपाती थी"।

"सतर" और परदा

अब अगर हम अपने आस पास का जायज़ा लें तो हमें आज यह गुनाह आ़म होता हुआ नज़र आता है। हालाँकि औ़रतों के लिए हुक्म यह है कि सिर के बाल उन के सतर का हिस्सा हैं क्यों कि औ़रत का पूरा जिस्म सिर से पांव तक सिवाये चेहरे के और सिवाये दोनों हथेलियों के और दोनों पैरों के पूरा जिस्म सतर है। जिस को नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है। क्योंकि अगर नमाज़ में कम अज़ कम चोथाई सिर के बाल खुल जायें, और इतनी देर खुले रहें जितनी देर में तीन बार सुब्हानल्लाहि पढ़ लिया जाये, तो नमाज़ नहीं होगी, या अगर किसी औ़रत ने सिर पर बारीक दोपट्टा ओढ़ लिया, जिस में सिर के बाल झलक रहे हैं तो ऐसे दोपट्टे में नमाज़ नहीं होगी, क्योंकि सतर छुपाने की शर्त पूरी नहीं हुई। कुछ औ़रतें बारीक दोपट्टे में नमाज़ पढ़ लेती हैं। या उस दोपट्टे को दूहरा कर लेती हैं हालाँ कि दूहरा कर लेने के बाद भी बाल दिखाई देते हैं। या कभी दोपट्टा इतना छोटा होता है कि उस

के अन्दर से चुटिया बाहर निकली हुई होती है वह दोपट्टे के अन्दर नहीं छुपती, या कुछ औ़रतों की आस्तीन इतनी छोटी होती हैं कि दोपट्टा ओढ़ने के बावुजूद उन के बाज़ू, गट्टे तक नहीं छुपते और मस्अला यह है कि अगर चोथाई सिर के बाल खुल जायें या चोथाई कलाई खुल जाये, या चोथाई पिन्डली खुल जाये और तीन बार सुबहानल्लाह पढ़ने के बराबर खुली रहे तो नमाज़ न होगी।

चेहरा, दोनों हथैलियाँ और दोनों पैरों के सिवा बाक़ी पूरा जिस्म नामेहरम मर्दों से छुपाना ज़रूरी है। यह परदे का हुक्म है।

परदा और 'सतर' में फ़र्क़

परदे का हुक्म अलग है और सतर का हुक्म अलग है। परदे के हुक्म में सिर से पैरों तक पूरा जिस्म दाख़िल है जिस को नामेहरम मर्दों से छुपाना घर में भी ज़रूरी है। और घर से बाहर भी ज़रूरी है। इस लिए घर में और घर के बाहर नामेहरम मर्दों के सामने सिर के बाल खोल कर आना गुनाह है। और यह उस का अ़ज़ाब है जो आपने पहले पढ़ा।

कुछ परदा दार औ़रतें घर के बाहर तो सिर और चेहरा छुपाने का एहतिमाम कर लेती हैं। लेकिन घर में

जो नामेहरम मर्द या क़रीबी नामेहरम रिश्तेदार हैं, उन से वे औ़रतें परदा करने का एह्तिमाम नहीं करतीं। उन के सामने सिर भी खुला है, गरदन भी खुली है, बाज़ू भी खुले हुये हैं, गिरेबान तक खुला हुआ है और कुछ औ़रतें साड़ी इस तरीक़े से पहनती हैं कि पेट और पीठ भी उस में दिखाई देते हैं। देवर या जेठ या ताया ज़ाद भाई, फूफी ज़ाद, मामू ज़ाद, और ख़ाला ज़ाद भाई घर में आते रहते हैं। लेकिन उन से परदा करने का कोई एह्तिमाम नहीं है, उन के सामने सिर, सीना हाथ और कलाइयाँ सब खुले हुये होते हैं। जब कि शरीअ़त में इन सब से परदा करने का हुक्म है और इन के सामने सिर खोलने की इजाज़त नहीं है।

घर के अन्दर रहने वाले ना मेहरम मर्दों से परदा करने का तरीक़ा

हाँ इतनी गुंजाइश है कि जो नामेहरम मर्द घर के अन्दर रहते हैं, जिन से हर वक़्त मुकम्मल परदा करना मुशकिल है, जैसे दैवर या जेठ घर के अन्दर रहते हैं और हर वक़्त उन का घर के अन्दर आना जाना लगा रहता है और वे अक्सर घर पर काम भी करते रहते हैं उन के बारे में यह हुक्म है कि उन के सामने भाबी को चाहिये कि वह कोई बड़ा, मोटा दोपट्टा इस तरह ओढ़े कि उस में

पैशानी (माथे) से ऊपर के और सिर के सारे बाल छुप जायें और दोपट्टा इस तरह बाँधे जिस तरह नमाज़ में बाँधा जाता है और उस में दोनों कलाइयाँ भी छुप जायें और वह अपनी पिन्डली भी शलवार वग़ैरह से छुपाये। पिन्डली का ज़िक्र इस लिये किया कि आज कल उन्हें खुला रखने का रिवाज चल रहा है जो सरासर नाजाइज़ है। सिर्फ़ चेहरा और दोनों हथैलियाँ और दोनों पैर खुले रहें, इस हालत में उन के सामने आना जाना रखे और घर का काम अन्जाम दे तो इस की गुंजाइश है और इस में भी बहतर यह है कि चेहरे पर घूंगट डाल कर उन के सामने आये जाये और ज़रूरत के वक़्त इसी घूंगट में उन से बात भी कर सकती है और जवाब भी दे सकती है। शरीफ़ और हयादार औरत के लिए चेहरे पर घूंगट डाल कर काम काज करना कोई मुशकिल नहीं शर्त यह है कि उसे आख़िरत की फ़िक्र हो, ख़ौफ़े ख़ुदा हो और अल्लाह के अज़ाब से डर लगता हो, लेकिन सिर खुला रखना, या सिर के ऊपर इतना बारीक दोपट्टा ओढ़ना कि उस में से सिर के बाल दिखाई दे रहे हैं या बराये नाम दोपट्टा गले में डाल रखा है, सिर पर नहीं रखा, कलाइयाँ भी खुली हुई हैं और कुहनियाँ भी खुली हुई हैं और बाज़ू भी खुले हुये हैं और कलाइयों में ज़ैवर भी पहना हुआ है। और

आज कल तो पिन्डली खोलने का मन्हूस रिवाज चल पड़ा है। लिहाज़ा घर के जो नामेहरम मर्द हैं उन के सामने भी उन अअ़ूज़ा को खोलना जाइज़ नहीं, और घर से बाहर खोलना तो किसी हाल में जाइज़ नहीं। लेकिन आज मुसलमान औ़रतों का जो हाल घर के अन्दर है। इस से ज़्यादा बुरा हाल घर से बाहर है। बाहर निकलते वक़्त बुरक़ा और परदे का कोई नाम नहीं और जो कपड़े पहने हुये हैं वे भी इतने बारीक या इतने चुस्त हैं कि बदन का हर हिस्सा नुमायाँ हो रहा है।

इस लिए औ़रतें यह बात ग़ौर से सुन लें कि ना मेहरम मर्दों के सामने नंगे सिर आने का अ़ज़ाब सरकारे दो आ़लम सल्ल० यह बयान फ़रमा रहे हैं कि मैं ने अपनी आँखों से उन को दोज़ख़ में सिर के बल लटके हुये देखा है और उन का दिमाग़ हाँडी की तरह पक रहा था-अल्लाह की पनाह।

अ़ज़ाबे क़बर का इब्रत नाक वाक़िआ़

मुझे अ़ज़ाबे क़बर से मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़ याद आया, यह वाक़िआ़ "गलगत" में पेश आया था, एक शख़्स क़ब्रिस्तान के पास से गुज़र रहा था, उस ने किसी क़बर से यह आवाज़ सुनी कि मुझे निकालो, मैं ज़िन्दा हूँ। जब एक दो बार उस ने आवाज़ सुनी तो उसने यह समझा कि यह

मेरा वेहम है, ख़्याल है, कोई आवाज़ नहीं आरही है। लेकिन जब मुसलसल उस ने यह आवाज़ सुनी तो उस को यक़ीन होने लगा, चुनान्चे क़रीब में एक बस्ती थी। वह शख़्स उस में आया, और लोगों को उस आवाज़ के बारे में बता कर कहा कि तुम भी चलो और उस आवाज़ को सुनो, चुनान्चे कुछ लोग उस के साथ आये उन्हों ने भी यही आवाज़ सुनी और सब ने यक़ीन कर लिया कि वाक़ई यह आवाज़ क़ब्र में से आरही है। अब यक़ीन होने के बाद उन लोगों को मस्अला पूछने की फ़िक्र हुई कि पहले ज़ुलमा-ए-किराम से यह मस्अला मालूम करो कि क़बर खोलना जाइज़ है या नहीं ? चुनान्चे वे लोग मुहल्ले की मस्जिद के इमाम साहिब के पास गये। और उन से कहा कि इस तरह क़बर में से आवाज़ आरही है और मय्यित यह कह रही है "कि मुझे क़बर में से निकालो मैं ज़िन्दा हूँ"।

इमाम साहिब ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें उस के ज़िन्दा होने का यक़ीन हो गया है तो क़बर को खोल लो और उस को बाहर निकाल लो। चुनान्चे ये लोग हिम्मत करके क़ब्रिस्तान गये। और जाकर क़बर खोली। अब जूंही तख़्ता हटाया तो देखा कि अन्दर एक औरत नंगी बैठी हुई है और उस का कफ़न गल चुका है और वह औरत कह

3) रही है कि जल्दी से मेरे घर जाओ और मेरे कपड़े लाकर दो। मैं कपड़े पहन कर बाहर निकलूंगी चुनान्चे ये लोग फ़ौरन दोड़ कर उस के घर गये और जाकर उसके घर वालों को यह वाक़िआ बताया और उस के कपड़े, चादर वग़ैरह लेकर आये और लाकर क़बर के अन्दर फेंक दिये। उस औ़रत ने उन कपड़ो को पहना और चादर अपने ऊपर डाली और फिर तेज़ी से बिज्ली की तरह अपनी क़बर से निकली और दोड़ी हुई अपने घर की तरफ़ भागी और घर जाकर अपने कमरे में छुप कर अन्दर से कुन्डी लगाली।

अब जो लोग क़ब्रिस्तान आये थे, दौड़ कर उस के घर पहुँचे और उन को वहाँ जाकर मालूम हुआ कि उस ने कमरे के अन्दर से कुन्डी लगाली है। उन लोगों ने दस्तक दी कि कुन्डी खोलो, अन्दर से उस औ़रत ने जवाब दिया। मैं कुन्डी तो खोल दूंगी लेकिन कमरे के अन्दर वह शख़्स दाख़िल हो जिस के अन्दर मुझे देखने की हिम्मत हो। इस लिए कि इस वक़्त मेरी हालत ऐसी है कि हर आदमी मुझे देख़ कर बर्दाशत नहीं कर सकेगा। लिहाज़ा कोई दिल गुर्दे वाला शख़्स अन्दर आये और आकर मेरी हालत देखे। अब सब लोग अन्दर जाने से डर रहे थे, मगर दो चार आदमी जो मज़्बूत दिल वाले थे, उन्हों ने कहा कि तुम कुन्डी खोलो, हम अन्दर आयेंगे। चुनान्चे उस ने कुन्डी खोल दी

और ये लोग अन्दर चले गये।

बे परदगी की सख़्त सज़ा

अन्दर वह औ़रत खुद को चादर में छुपाये बैठी थी जब ये लोग अन्दर पहुँचे तो उस औ़रत ने सब से पहले अपना सिर खोला, उन लोगों ने देखा कि उस के सिर पर एक भी बाल नहीं है।

वह बिलकुल ख़ाली खोपड़ी है न उस पर बाल है न खाल है सिर्फ़ ख़ाली हड्डी है। लोगों ने उस से पूछा तेरे बाल कहाँ गये ? उस औ़रत ने जवाब दिया कि जब मैं ज़िन्दा थी तो नंगे सिर घर से बाहर निकला करती थी। फिर मरने के बाद जब मैं क़ब्र में लाई गई तो फ़रिश्तों ने मेरा एक एक बाल नोचा और उस नोचने के नतीजे में बाल के साथ खाल भी निकल गई। अब मेरे सिर पर न बाल हैं न खाल है।

लिपिस्टिक लगाने की सज़ा

इस के बाद उस औ़रत ने अपना मुँह खोला, जब लोगों नें उस का मुंह देखा तो वह इतना ख़ोफ़ नाक हो चुका था कि सिवाये दाँतों के कुछ नज़र न आया न ऊपर का होंट मोजूद था और न नीचे का मोजूद था, बल्कि बत्तीस (३२) के बत्तीस (३२) दाँत सामने जुड़े हुये नज़र आरहे थे।

सोचिये अगर किसी इन्सान के सिर्फ़ दाँत ही दाँत नज़र आयें तो कितना डर मालूम होता है। अब उन लोगों ने उस औ़रत से पूछा तेरे होंट कहाँ गये ? उस औ़रत ने जवाब दिया कि "मैं अपने होंटों पर लिपिस्टिक लगा कर नामेहरम मर्दों के सामने जाया करती थी। उस की सज़ा में मेरे होंट काट लिए गये। इस लिए अब मेरे चेहरे पर होंट नहीं हैं"।

नाखुन पालिश लगाने पर अ़ज़ाब

इस के बाद उस औ़रत ने अपने हाथ और पैरों की उंगलियाँ खोलीं लोगों ने देखा उस के हाथ और पैरों की उंगलियों में एक भी नाखुन नहीं था तमाम उंगलियों के नाखुन ग़ायब थे। उस से पूछा तेरी उंगलियों के नाखुन कहाँ गये ? उस औ़रत ने जवाब दिया "नाखुन पालिश लगाने की वजह से मेरा एक एक नाखुन खींच लिया गया। क्योंकि मैं ये सारे काम करके घर से बाहर निकला करती थी। इस लिए जैसे ही मैं मरने के बाद क़बर में पहुँची तो मेरे साथ यह मआ़मला किया गया और मुझे यह सज़ा मिली कि मेरे सिर के बाल भी नोच लिए गये, मेरे होंट भी काट दिए गये, और मेरे नाखुन भी खींच लिए गये"। इतनी बात करने के बाद वह बेहोश होगई और मुर्दा बे जान हो गई। जैसे लाश होती है।

चुनान्चे उन लोगों ने दोबारा उस को क़ब्रिस्तान में पहुँचा दिया। अल्लाह तआ़ला को यह इब्रत दिखानी मक़सूद थी कि देखो ! इस औ़रत का अन्जाम किया हुआ ? और उस को कितना दर्दनाक अ़ज़ाब दिया गया बेपरदा औ़रतें इस वाक़िऐ से इब्रत हासिल करें और उन गुनाहों से तोबा करें जो अब तक कर चुकी हैं।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना?

किसी के दिल में यह शक पैदा हो सकता है कि मरने के बाद तो कोई ज़िन्दा होता नहीं, यह औ़रत कैसे ज़िन्दा हो गयी ? उस का जवाब यही है कि अल्लाह तआ़ला का आ़म क़ायेदा तो यही है कि मरने के बाद कोई ज़िन्दा नहीं होता हैर दुनिया में वापस नहीं आया करता लेकिन अल्लाह तआ़ला कभी कभी इबरत के लिए ऐसा कर दिया करते हैं और यह बात आज से नहीं बल्कि जब से दुनिया चली है उस वक़्त से यह होता चला आरहा है। और हर ज़माने में कोई न कोई वाक़िआ़ इस क़िस्म का पेश आता रहा है कि मरने के बाद कोई ज़िन्दा हो गया और उस ने मरने के बाद का हाल सुना दिया और फिर दोबारा मर गया।

हाफ़िज़ इब्ने अबिद्दुनिया रह० का अ़रबी में एक रिसाला है जिस का नाम "मन आ़श बअ़दल मौति" है

इस रिसाले में सनद के साथ बहुत से ऐसे वाक़िआत लिखे हुये हैं कि एक इन्सान मर गया और फिर उस ने ज़िन्दा हो कर बात की, और मरने के बाद के हालात से ज़िन्दा लोगों का ख़बरदार किया और फिर दोबारा इन्तिक़ाल कर गया।

इसी तरह हाफ़िज़ इब्ने रजब हम्बली रह० ने "अह्वालुल्कुबूर" के नाम से एक किताब लिखी है उस में भी कुछ ऐसे वाक़िआत लिखे हैं। बहर हाल कभी कभी इब्रत के लिए अल्लाह तआला ऐसे वाक़िआत दिखाते रहते हैं। लिहाज़ा यह कुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ नहीं है। अल्बत्ता आम दस्तूर यही है कि मरने के बाद इन्सान ज़िन्दा नहीं होता।

बेपरदगी की वजह से दोज़ख़ का अज़ाब

दोज़ख़ में औरतों पर अज़ाब देखने के बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने और भी बहुत सी हदीसों में बयान फ़रमाया है। चुनान्चे ना मेहरम मर्दों के सामने बे परदा निकलने के बारे में एक हदीस में आप सल्ल० ने फ़रमाया "मैं ने दोज़ख़ में ज़्यादा तर औरतों को देखा। फिर फ़रमाया औरतों के दोज़ख़ में कस्रत से जाने की चार वजहें हैं।

(१) एक वजह यह है कि उनमें अल्लाह तआला की

इताअ़त का माद्दा बहुत कम पाया जाता है।

(२) दूसरी वजह यह है कि उन में अल्लाह के रसूल सल्ल० की ताबेदारी का जज़्बा कम है।

(३) तीसरी वजह यह है कि उन में अपने शौहर की फ़रमाँ बरदारी बहुत कम है।

(४) चोथी वजह यह है कि उन के अन्दर बन ठन कर बेपरदा घर से बाहर निकलने का जज़्बा बहुत पाया जाता है।

यह चोथी वजह वही है जो हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि आज कल ज़्यादा तर औ़रतें जब बाहर निकलेंगी तो ख़ूब बढ़या से बढ़या जोड़ा पहन कर और खूब सज धज कर मैकअप करके खुश्बू लगाकर बेपरदा बाहर निकलेंगी अगर कोई औ़रत शरई परदे में होकर बाहर निकले और एसी ख़ुश्बू लगा कर न निकले जिस की ख़ुश्बू दूसरे नामेहरम मर्दों तक जाये या जो ख़ूब बन संवर कर सिर्फ़ अपने शौहर के सामने आये, या अपने बाप, भाई, और बेटे के सामने आये तो उस में कोई बुराई नहीं, जाइज़ है। क्योंकि शौहर के लिए ख़ूब बन संवरना सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं बल्कि अच्छा है। लेकिन यह अ़ज़ाब, वबाल इस सूरत में है कि औ़रतें ना मेहरम मर्दों के सामने बन संवर कर आयें। चाहे वे ना मेहरम घर के हों या बाहर

के हों। इस वक़्त यह काम गुनाह, हराम और ना जाइज़ है जिस से बचना वाजिब है।

दूसरी औरत पर अज़ाब का सबब "ज़बान दराज़ी"

दूसरी औरत जिस को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने देखा कि वह ज़बान के बल दोज़ख़ के अन्दर लटकी हुई है उस के बारे में आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह वह औरत है जो अपनी ज़बान दराज़ी से अपने शौहर को तकलीफ़ पहुँचाया करती थी, कुछ औरतों में यक़ीनी तौर पर यह बात पाई जाती है कि वे बहुत ही मुंह फट, ज़बान दराज़, बद गो और बहुत ज़्यादा ज़बान चला कर अपने शौहर को तकलीफ़ पहुँचाने की आदी होती हैं, और यह बात तो मर्द के लिए भी जाइज़ नहीं कि वह अपनी ज़बान से अपनी बीवी को ना हक़ तकलीफ़ पहुँचाये, या उस को सताऐ और परैशान करे, मर्द के लिए यह बात अज़ाब और वबाल का सबब है लेकिन इस हदीस में यह सिफ़त ख़ास औरतों के मुतअ़ल्लिक़ बयान की जा रही है कि बात बात पर शौहर से लड़ना और बद तमीज़ी करना ऐसी बातें करना जिस से शौहर का दिल दुखे, उस को तकलीफ़ पहुँचे ऐसी औरतों के बारे में यह अज़ाब बताया गया है कि वे दोज़ख़ में ज़बान के बल लटकेंगी।

ज़बान दराज़ी संगीन (बड़ा) गुनाह है

अगर इन्सान किसी को हाथ से मार दे, या किसी चीज़ से मार दे उस की तकलीफ़ ज़्यादा देर तक बाक़ी नहीं रहती, लेकिन ज़बान से कभी इन्सान ऐसी बात कह देता है कि ज़िन्दगी भर दूसरा इन्सान उस को नहीं भूलता, ज़बान का जिस्म तो बहुत छोटा है मगर उसके गुनाह बड़े संगीन (ख़तरनाक) हैं, उन संगीन गुनाहों में से एक संगीन गुनाह ज़बान दराज़ी भी है। यह ऐसा संगीन गुनाह है कि जो घर के सारे सुकून, चैन को दूर करदेता है। और ज़िन्दगी को अजीरन बना देता है। अगर उस का सबब किसी औरत की ज़बान है, तो उस के लिए इस हदीस में यह अज़ाब और वबाल बयान किया गया है।

इस लिए औरतों को इस बात का ख़्याल रखना चाहिये कि वे ज़बान से कोई ऐसी बात न निकालें जिस से उन के शौहर को कोई तकलीफ़ पहुँचे, ऐसे ही शौहरों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे अपनी ज़बान से एसी बात न कहें जिस से बीवी को तकलीफ़ चहुँचे बल्कि तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों को यह हुक्म है कि वे अपनी ज़बान पर क़ाबू रखें, और ज़बान से ऐसी बात कहना जिस से दूसरों को तकलीफ़ पहुँचे अज़ाब का सबब है। और गुनाह है। और किसी मुसलमान को ना हक़ तकलीफ़ पहुँचाना हराम

है। और जिस तहर हाथ के ज़रीये और इशारों और किनायों के ज़रीये तकलीफ़ पहुँचाना गुनाह है इसी तरह ज़बान के ज़रीये तकलीफ़ पहुँचाना भी गुनाह है। इस लिए इस बात का एह्तिमाम करना चाहिये कि ज़बान से वही बात निकले जिस से दूसरों का दिल खुश हो और दूसरों को तकलीफ़ न पहुँचे। और अपनी ज़बान को क़ाबू में करें।

तीसरी औ़रत पर अ़ज़ाब का सबब "नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात"

तीसरी औ़रत जिस को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने देखा कि वह अपनी छातियों के बल लटकी हुई है। इस के बारे में आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह वह औ़रत है जो शादी शुदा होने के बावुजूद दूसरे मर्दों से नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात रखती थी शरीफ़ और हया दार औ़रतें तो इस का तसव्वुर भी नहीं कर सकतीं, इसी तरह शरीफ़ और हयादार मर्द भी इस का तसव्वुर नहीं कर सकते।

बे हयाई (बेशरमी) के संगीन (बुरे) नतीजे

लेकिन जिस मुआ़शरे में हया का ख़ातमा हो चुका हो, और बेहयाई का दौर दोरा हो, उसमें इस बात को कहाँ बुरा समझा जायेगा बल्कि ऐसे मुआ़शरे में इस को फ़ैशन के तौर पर इख़्तियार किया गया है। अल्लाह के रसूल

सल्ल० ने फ़रमाया :

اَلْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِيْمَانِ

अलहयाउ शुअ़्बतुम मिनल ईमानि

तर्जुमा : हया ईमान की एक शाख़ है।

यानी दीन और ईमान का एक अहम शुअ़बा "हया" है। यह हया ऐसी चीज़ है जो इनसान को बहुत से गुनाह से बचा लेती है, चुनान्चे जिन्सी नौअ़ियत के जितने गुनाह हैं, उन सब में हया एक परदा और रूकावट बन जाती है। इसी हया की वजह से इन्सान ग़ैर मेहरम औ़रत की तरफ़ नज़र नहीं उठा सकता, किसी ना मेहरम के पास जाने और उस के पास एकान्त में बैठने से हया उस इन्सान को रोकेगी, इसी तरह अगर औ़रत हयादार है तो वह हया उस को नामेहरम मर्द की तरफ़ देखने से रोकेगी, और यह हया ही दर असल बाप और बेटी के दरमियान भाई और बहन के दरमियान सुसर और बहू के दरमियान परदा है। ख़ुदा न करे अगर किसी जगह पर किसी वक़्त इस हया का ख़ात्मा हो गया तो फिर बेटी और अजनबी औ़रत सब बराबर है।

बाप और बेटी के दरमियान हया का परदा

मेरे एक दोस्त जो बहुत बड़े आ़मिल हैं। उन के पास ज़्यादा तर औ़रतों ही का आना जाना रहता है। किसी पर

जिन्न चढ़ा हुआ है, किसी पर आसैब का असर है, किसी पर जादू का शुबह है, किसी के लिए शादी की कोशिश है, एक माह पहले जब मेरी उन से मुलाक़ात हुई तो वह मेरे कान में चुपके चुपके कहने लगे कि आज कल मेरे पास ज़्यादा तर औरतें अपनी यह परैशानी लेकर आती हैं कि कोई ऐसा तअ़वीज़ देदो कि बाप की नज़र बेटी से हट जाये, इस लिए कि हमें रात को बार बार उठकर पहरा देना पड़ता है कि कहीं एसा तो नहीं कि बाप बेटी को परेशान कर रहा हो फिर कहने लगे कि मैं तो सुन कर काँप जाता हूँ कि उन को क्या इलाज बताऊँ, जब बाप ही का दिल बेटी पर आगया तो अब ज़मीन पर जीने का किया हक़ रह गया।

टी॰वी॰ का वबाल

मगर लोगों की यह बात समझ में नहीं आती कि यह सब टी॰वी॰ देखने का नतीजा है। वे तो कहते हैं कि टी॰वी॰ देखने में क्या नुक़्सान है ? हालाँकि यह सारा वबाल टी॰वी॰ का है इस लिए कि टी॰वी॰ पर नंगी फ़िल्में देख देख कर हया का जनाज़ा निकल गया है। बाप से भी हया निकल गयी है। और भाई से भी हया निकल गई है। और जब हया बाक़ी न रहे तो फिर रसूलुल्लाह सल्ल॰ का इरशाद है :

اِذَا فَاتَكَ الْحَيَآءُ فَافْعَلْ مَاشِئْتَ

इज़ा फ़ात कल हयाउ फ़फ़्अ़ल मा शित

तर्जुमा : जब तुम्हारी हया का ख़ात्मा हो जाये तो जो चाहे करो।

इस लिए कि फिर हर बुराई आप के लिए बराबर है। हया ही यह बताती है कि देख यह तेरी बेटी है। और यह तेरी बहन है और यह तेरी माँ है। और यह तेरी बहू है। अगर हया नहीं तो फिर उस के लिए सब औ़रतें बराबर हैं। फिर तो जानवरों जैसी हालत होगी। क्योंकि जानवर में भी हया नहीं, इस लिए तो उन के अन्दर माँ बहन का रिश्ता भी नहीं, इन्सान के अन्दर अल्लाह तआ़ला ने हया का माद्दा रखा है। वह हया ही उस को इन बातों से रोकती है, और जानवरों से अलग करती है।

टी०वी० हया साफ़ करने का उस्तरा है

बहर हाल यह टी०वी० हया को साफ़ करने का उस्तरा है। अख़्लाक़ को बरबाद करने का ज़रीया है। ईमान को ग़ारत करने का सबब है। जिस तरह उस्तरे से सिर के सारे बाल साफ़ हो जाते हैं, इसी तरह टी०वी० और फ़िल्में देखने से इन्सान की हया का ख़ात्मा हो जाता है, अखलाक़ का ख़ात्मा हो जाता है, आमाल का ख़ात्मा हो जाता है। और आख़िर में कभी ऐसा भी होता है कि

ईमान भी चला जाता है। बहर हाल जो औ़रत दूसरे मर्दों पर नज़र रखती हो और उन से नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात रखती हो उस के लिए यह अ़ज़ाब है कि दोज़ख़ में उस को छातियों के बल लटकाया जायेगा।

लिहाज़ा इस गुनाह से बचें।

चोथी औ़रत पर अ़ज़ाब का सबब "इस्तिह्ज़ा" (मज़ाक़)

चोथी औ़रत जिस को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस हालत में देखा कि उस के दोनों पैर सीने से बंधे हुये हैं, और दोनों हाथ सिर से बंधे हुये हैं, उस के बारे में आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह वह औ़रत है जो दुनिया में जनाबत (नापाकी) और हैज़ (माहवारी) से पाक साफ़ रहने का एह्तिमाम नहीं करती थी, और नमाज़ के साथ बड़ी लापरवाही बल्कि इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़) का मआ़मला करती थी।

.ग़ुस्ले फ़र्ज़ में ताख़ीर (देर) की हद

.ग़ुस्ल का मस्अला यह है कि जब मर्द और औ़रत पर .ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाये तो अफ़्ज़ल यह है कि उसी वक़्त .ग़ुस्ल करलें और अगर उस वक़्त .ग़ुस्ल न करें तो कम से कम इस्तिन्जा करके वुज़ू करलें और फ़िर सोजायें और अगर यह भी न कर सकें तो कम से कम इस्तिन्जा करलें,

कुल्ली करलें, और हाथ धो कर सो जायें और अगर यह भी न कर सकें तो फिर आख़री दर्जा यह है कि सुबह सादिक़ होने पर जमाअ़त से इतनी देर पहले .गुस्ल कर लें कि अगर मर्द है तो उस की नमाज़े फ़ज्र जमाअ़त से अदा हो जाये, अगर औ़रत है तो .गुस्ल से फ़राग़त के बाद सूरज निकलने से पहले नमाज़े फ़ज्र अदा करले यह आख़री दरजा है। इस वक़्त से ज़्यादा ताख़ीर (देर) करने की गुंजाइश नहीं है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स जनाबत (नापाकी) की हालत में सो गया, और फिर सूरज निकलने के बाद उठा तो उस के लिए यह अ़ज़ाब और वबाल है। क्योंकि .गुस्ल करने में इतनी देर करना जिस की वजह से जमाअ़त छूट जाये, या नमाज़ क़ज़ा हो जाये, नाजाइज़ और हराम है।

देर से सोने की नहूसत

हमारे यहाँ देर से सोने का ऐसा मनहूस फ़ैशन चल पड़ा है, जिस की वजह सै उ़मूमन सुबह सवेरे उठना मुश्किल हो जाता है। रात को इतनी देर तक जागना कि जिस की वजह से फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो जाये, जाइज़ नहीं है। फिर अगर जनाबत(नापाकी) की हातल में हो तो फ़ज्र की नमाज़ का क़ज़ा होना और यक़ीनी हो जाता है। चाहे वह मर्द हो या औ़रत और जनाबत की हालत में

इस तरह सारी रात गुज़ारना कि फ़ज्र की नमाज़ भी क़ज़ा हो जाये और ज़्यादा नाजाइज़ और गुनाह है और अज़ाब का सबब है।

लिहाज़ा इस गुनाह से बचने की फ़िक्र करनी चाहिये।

माहवारी से पाकी पर फ़ौरन ग़ुस्ल

इसी तरह माहवारी के माआमले में भी यह हुक्म है कि जब पाकी हो जाये, और पाकी की निशानी पाई जाये, और उस वक़्त किसी नमाज़ का भी वक़्त है, और यह इम्कान है कि अगर जल्दी से ग़ुस्ल कर लिया जाये तो वक़्त निकलने से पहले कम से कम अल्लाहु अक्बर कहने का वक़्त मिल जायेगा तो उस वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ हो जायेगी, इस लिए उस वक़्त यह हुक्म है कि फ़ौरन जल्दी से ग़ुस्ल करके नमाज़ पढ़े और अगर इस से ज़्यादा वक़्त मिले तो फिर यक़ीनी तौर पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जायेगी जैसे नमाज़ का वक़्त ख़त्म होने में एक घन्टा बाक़ी है, और पाकी की निशानी मोजूद है तो वह फ़ौरन ग़ुस्ल करके नमाज़ पढ़े।

लेकिन आज कल औरतों में यह मर्ज़ आ़म है कि उस वक़्त को लापरवाही में गुज़ार देती हैं। चुनान्चे अगर रात को इशा के बाद पाक हो गयीं तो सारी रात बग़ैर ग़ुस्ल किये नापाकी की हालत में गुज़ार देंगी, हालाँ कि सुबह

सादिक़ से पहले .ग़ुस्ल करके इशा की नमाज़ पढ़ना उन पर फ़र्ज़ हो चुका है। इस लिए ऐसी सूरत में उन को चाहिये कि .ग़ुस्ल कर के पाक साफ़ हो जायें, और नमाज़ अदा करें, हज़रात सहाबियात रज़ि० का आख़िरत की फ़िक्र की वजह से यह हाल था कि वे रात को बार बार उठ कर और चिराग़ जलाकर देखा करती थीं कि कहीं ऐसा तो नहीं पाकी हो चुकी हो। और नमाज़ फ़र्ज़ हो चुकी हो और फिर हमारी नमाज़ क़ज़ा हो जाये आज कल तो चिराग़ जलाने की भी ज़हमत नहीं है सिर्फ़ बटन दबाने की देर है। जिस में कोई दिक़्क़त नहीं। इस के बावुजूद उस के अन्दर ला परवाही करने और कई कई नमाज़ें ज़ाया करने का यह अज़ाब और वबाल है जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस हदीस में बयान फ़रमाया। लिहाज़ा जनाबत (नापाकी) और माहवारी के मुआ़मले में बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है कि उस की वजह से हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा न हो जाये और आम हालात में भी नमाज़ क़ज़ा करने से बचना ज़रूरी है।

अज़ाब का सबब

"नमाज़ का इस्तिह्ज़ा" (मज़ाक़)

इस अज़ाब की तीसरी वजह जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बयान फ़रमाई, वह नमाज़ का इस्तिह्ज़ा

(मज़ाक़) उड़ाना है और नमाज़ को मामूली समझ कर उस की तरफ़ से लापरवाही करना है, इस मआमले में हमारे आम मर्दों और औरतों का लग-भग एक जैसा हाल है। चुनान्चे जितने भी नौजवान हैं, उमूमन उन के अन्दर नमाज़ का एहतिमाम नहीं है, न लड़को में न लड़कियों में, इसी तरह आज़ाद ख़्याल औरतों में भी नमाज़ का कोई एहतिमाम नहीं, और अगर उन से नमाज़ के बारे में कहा जाये तो ऐसे तरीक़े से जवाब दिया जाता है कि जिस से ऐसा मालूम होता है कि उन की नज़र में नमाज़ कोई ज़रूरी काम ही नहीं। हालाँ कि ख़ुशी हो या ग़मी, लेकिन नमाज़ छोड़ना जाइज़ नहीं, आज कल की तक़रीबात में देखिये उन में किस तरह लड़को, लड़कियों, और मर्दों और औरतों की नमाज़ें बरबाद होती हैं, और एसी तक़रीबात हक़ीक़त में वबाल हैं। अल्लाह तआला हम सब को ऐसे वबाल से बचाये। आमीन

पाँचवी औरत पर अज़ाब का सबब "चुग़ली"

पाँचवी औरत जिस को आप सल्ल० ने इस हालत में देखा कि उस का चेहरा सुव्वर की तरह है और बाक़ी जिस्म गधे की तरह है और साँप बिच्छू उस को लिपटे हुये हैं।

इस के बारे में आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह वह

औ़रत थी कि जिस को झूट बोलने और चुग़ली खाने की वजह से अ़ज़ाब हो रहा था। आप हज़रात जानते हैं कि यह दोनो गुनाह सिर्फ़ औ़रतों के साथ ख़ास नहीं हैं बल्कि अगर मर्दों के अन्दर भी यह गुनाह पाये जायेंगे तो उन की भी पकड़ होगी और उन पर भी अ़ज़ाब होगा।

ग़ीबत और चुग़ली में फ़र्क़

एक गुनाह है "ग़ीबत" और एक गुनाह "चुग़ली" यह दोनों गुनाह हराम हैं दोनों से बचना ज़रूरी है। लेकिन इन दोनों में थोड़ा सा फ़र्क़ है। "ग़ीबत" उसे कहते हैं कि किसी के पीठ पीछे उस की इस तरह बुराई करना कि अगर उस को मालूम हो जाये तो वह उस को ना पसन्द करे। जैसे किसी शख़्स में कोई ऐब है। अब हम दूसरों को जाकर बता रहे हैं कि फ़लाँ शख़्स में यह ऐब है। उस का नाम ग़ीबत है, लेकिन अगर हम किसी शख़्स की बुराई उस के पीठ पीछे इस निय्यत से करें ताकि दोनों में लड़ाई हो, बद गुमानी हो, और ना इत्तिफ़ाक़ी पैदा हो तो इस को "चुग़ली" कहते हैं। और चुग़ली का गुनाह "ग़ीबत" से बढ़ कर है। इस लिए कि ग़ीबत में तो सिर्फ़ दोसरों की बुराई मक़सूद होती है। लेकिन चुग़ली में तो बुराई के अ़लावा यह भी मक़सूद है कि उन दोनों के दरमियान लड़ाई हो और उन दोनों के दरमियान ज़ो दोस्ती और

मुहब्बत और तअ़ल्लुक़ है वह ख़त्म हो जाये जैसे सास ने बहू की बातें सुसर के सामने या उस के शौहर के सामने लगाईं, अब शौहर बीवी से नाराज़ हो रहा है, और सुसर भी बहू से बद गुमान हो रहा है। यह चुग़ली है और हराम है। और आज कल यह मस्अला आम है, और हर घर का मस्अला है। एक घराना जो सास, बहू, सुसर और शौहर इन चार अफ़राद पर मुश्तमिल है, लेकिन चारों एक दूसरे से कटे हुये हैं। इस लिए कि चारों इस चुग़ली की मुसीबत में मुब्तला हैं और हर एक दूसरे की चुग़ली और बद गुमानी में लगा हुआ है। इस की वजह से घर का निज़ाम बिगड़ गया है। घर का सुकून ख़त्म हो गया है। और आख़िरत में भी इस पर बड़ा अ़ज़ाब और वबाल है।

एक चुग़लख़ोर का क़िस्सा

एक चुग़लख़ोर का क़िस्सा याद आया। एक शख़्स ने बाज़ार में देखा कि एक शख़्स अपना ग़ुलाम बेच रहा है, और यह आवाज़ भी लगा रहा है कि "यह बहुत अच्छा ग़ुलाम है"। इस के अन्दर इस के अ़लावा कोई और ऐब नहीं है कि यह कभी कभी चुग़ली खाता है।

किसी शख़्स ने यह आवाज़ सुनी, उस ने सोचा इस में तो कोई ऐब नहीं है और चुग़ली खाना तो आम बात है। इस में क्या ख़राबी है। इस ग़ुलाम को ख़रीद लेना

चाहिये चुनान्चे उसने सोदा करके वह ग़ुलाम ख़रीद लिया, और अपने घर लेआया, कुछ दिनों तक तो वह ग़ुलाम ठीक ठीक काम करता रहा, उस के बाद उस ने अपना रंग दिखाना शुरू किया। क्योंकि चुग़लख़ोरी के अन्दर वह माहिर था इसलिए चुग़लख़ोरी के अन्दर उसने अपना कर्तब दिखाया और सब से पहले वह अपनी मालकिन के पास गया, और उस से जाकर कहा कि आप के शौहर जो मेरे आक़ा हैं वह किसी और औ़रत से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और उस के पास आते जाते हैं। और जल्द ही वह तुझे छोड़ कर उस से शादी करलेंगे और मैं तेरी भलाई के लिए तुझे बता रहा हूँ किसी और को मत बताना। ये बातें सुन कर वह बीवी बहुत घबराई और परेशान हुई, फिर ख़ुद ग़ुलाम ही ने उस की परेशानी का इलाज बताया कि मुझे एक तरकीब आती है, तुम उस पर अ़मल करलो, वह यह कि जब तुम्हारे शौहर सो जायें तो तुम उस्तरे से उन की दाढ़ी के एक दो बाल काट कर अपने पास रख लेना। फिर देखना क्या होता है। फिर वह हमेशा तुमहारे होकर रहेंगे। कभी दूसरी औ़रत की तरफ़ नज़र नहीं उठायेंगे। औ़रत ने जवाब दिया कि यह क्या मुश्किल काम है। यह तो मैं आज ही कर लूँगी। ख़ुदा न करे कल को कुछ और हो गया तो क्या होगा।

और अब वह ग़ुलाम आक़ा के पास आया और उस से कहा कि तुम्हारी बीवी के दूसरे मर्दों से नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात हैं, और जल्द ही वह आप को छोड़ कर जाने वाली है। और उस ने यह ठान ली है कि वह आज रात आपको उस्तरे से ज़िबह करेगी, अगर आप को मेरी बात का यक़ीन न हो तो आप झूट मूट सोकर देखना और गला न कट जाये तो बताना। चुनान्चे वह आक़ा जाकर झूट मूट सो गया और इधर बीवी इस इन्तिज़ार में थी कि कब उन की आँख लगे तो मैं अपना काम करूँ, मियाँ को नींद कहाँ आती, इस लिए उस ने बनावटी ख़र्राटा लेना शुरू करदिया। अब बीवी को यक़ीन हो गया कि मियाँ साहब को नींद आगई है। फ़ौरन उस्तरा लेकर पहुँची और अभी हलका सा उस्तरे को गले पर रखा था कि आक़ा ने फ़ौरन आँख खोल दीं और बीवी को पकड़ कर कहा कि अच्छा तुम मुझे ज़िबह करना चाह रही थीं ग़ुस्सा तो पहले ही से आ रहा था। उस आक़ा ने उसी उस्तरे से बीवी को ज़िबह कर दिया, जब बीवी के ख़ानदान वालों को मालूम हुआ कि शौहर ने बेटी को ज़िबह करदिया है। उनहोंने आकर उसी उस्तरे से शौहर को पकड़ कर ज़िबह कर दिया।

अब शौहर के ख़ानदान वाले भी आगये और दोनों

ख़ानदानों में खूब झगड़ा हुआ, और बीसयों अफ़राद कट गये।

घर के अफ़राद में "चुग़ली"

आप ने देखा कि उस ग़ुलाम ने ज़रा सी चुग़ली से किस तरह से दोनों ख़ानदानों को तबाह कर दिया। इसी लिए इस चुग़ली को शरीअ़त ने हराम क़रार दिया हैं। अब चाहे चुग़ली हर जगह क़तल न कराये, मगर दिल तो टुकड़े-टुकड़े हो ही जाते हैं, अब तक बहू और सास में बड़ी मुहब्बत थी, लेकिन अब चुग़ली लगा कर दोनों के दिल फाड़ दिये। अब तक सुसर अपनी बहू के साथ बड़ी शफ़क़त के साथ पेश आता था, लेकिन सास ने उस के कान भर भर कर बहू की तरफ़ से उस का दिल फाड़ दिया। अब घर के अन्दर यह हाल हो गया कि न बेटे के दिल में बाप का एहतिराम रहा और न सुसर के दिल में बहू का एहतिराम रहा और न बहू के दिल में सास की मुहब्बत रही।

और यह चुग़ली करना और कान भरना जिस तरह घर के अफ़राद के अन्दर होता है, इसी तरह घर के बाहर के अफ़राद के अन्दर भी होता है। जैसे दोस्तों में, रिश्तेदारों में यह चुग़ली खाई जाती है। और किसी के सिर्फ़ बताने पर पूरा यकीन कर लेते हैं कि यक़ीनन उस ने एसा कहा

होगा, जब कि इस तरह सुनी सुनाई बातों पर बग़ैर तहक़ीक़ के यक़ीन करना भी जाइज़ नहीं। बहर हाल यह चुग़ली बहुत बुरी चीज़ है। इस से बहुत ज़्यादा बचना चाहिये।

अ़ज़ाब का सबब "झूट बोलना"

इस चुग़ली के साथ दूसरा गुनाह जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया, वह है "झूट बोलना" आप हज़रात जानते ही हैं कि झूट बोलना कितना बड़ा गुनाह है और चुग़ली के अन्दर झूट का होना लाज़मी है, इस लिए कि झूट के बग़ैर चुग़ली कैसे चलेगी। और जिस तरह आज हमारे मुआ़शरे में चुग़ली आ़म है, इसी तरह झूट भी आ़म है। हर मैदान में झूट का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला है। अब बनावटी सर्टीफ़िकेटस और बनावटी सनदें, मार्क शीटें बनाई जाती हैं, पैसे देकर इनजीनयर की सनद लेलो, वकालत की सनद लेलो झूटी सनद तैयार है। झूटे काग़ज़ात पर नौकरियाँ इख़्तियार की जा रही हैं, याद रखो ! इन तमाम सूरतों में झूट बोलना, लिखना, बताना सब हराम है। और सख़्त गुनाह है।

तीन तरह के अफ़राद पर क़ियामत के दिन अ़ज़ाब

इसी लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया

कि तीन आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उन की तरफ़ रहमत की नज़र नहीं फ़रमायेंगे, न उन से बात करेंगे, और उन के लिए दर्द नाक अज़ाब है।

एक आदमी वह जो सफ़र में है और उस के पास ज़रूरत से ज़्यादा पानी मौजूद है, दूसरे मुसाफ़िर को पानी की ज़रूरत है, और वह उस से पानी माँगता है, मगर यह पानी देने से मना कर देता है। ऐसे शख़्स के लिए यह अज़ाब है, हाँ अगर पानी ज़रूरत से ज़्यदा नहीं है, तो फिर मना कर देना जाइज़ है। इस में कोई गुनाह नहीं।

झूटी क़सम खाने वाला

दूसरा शख़्स जिस को यह अज़ाब दिया जायेगा वह ताजिर है जो ख़रीदार को यह कहता है कि मैं ने यह चीज़ इतने में ख़रीदी है और तुम्हें इतने में बेच रहा हूँ, और उस पर क़सम भी खाले, हालाँ कि जो क़ीमत वह ख़रीदार को बता रहा है, उस ने उस क़ीमत पर वह चीज़ नहीं ख़रीदी, जैसे ताजिर कहता है कि मैं ने यह चीज़ एक हज़ार रूप्ये में ख़रीदी है, और तुम्हें बारह सौ रूप्ये में बेच रहा हूँ, और एक हज़ार में ख़रीदने पर क़सम भी खालेता है। जब कि उस ने वह चीज़ आठ सो में ख़रीदी है, और क़सम खाने की वजह से ख़रीदार मुतमइन होगया, और उस ने मुतमइन होकर वह चीज़ बारह सो में

ख़रीद ली। अगर ख़रीदार को यह मालूम हो जाता कि उस ने यह चीज़ आठ सो में ख़रीदी है तो वह कभी भी उस को बारह सो में न ख़रीदता, लिहाज़ा उस ने झूटी क़सम खाई और इस झूटी क़सम पर अ़ज़ाब यह है। जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बयान फ़रमाया :

तीसरा शख़्स वह है जो एह्सान करके जतलाता है उस को भी यह अ़ज़ाब होगा कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस की तरफ़ रहमत की नज़र नहीं फ़रमायेंगे। और न उस से बात चीत फ़रमायेंगे, और उस के लिए दर्द नाक अ़ज़ाब होगा।

कुछ लोगों में एह्सान जतलाने की बहुत आदत होती है वे इस गुनाह से ख़ास कर बचें।

झूट का रिवाज आ़म

बहर हाल यह तीन आदमी ऐसे हैं कि जिन को दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जायेगा। और वह दर्दनाक अ़ज़ाब यही है कि उन का चेहरा सुव्वर की तरह होगा, और बाक़ी जिस्म गधे की तरह होगा, और दोज़ख़ के साँप बिच्छू उस को लिपटे हुये होंगे। यह अ़ज़ाब चुग़ली और झूट बोलने की वजह से होगा, आज हमारे घरों में झूट बोला जाता है। हमारे बाज़ारों में झूट बोला जाता है, हमारे दफ़्तरों में झूट बोला जाता है, हमारी तक़रीबात में

झूट बोला जाता है।

और इस झूट को फ़ैशन के तौर पर अपना लिया गया है। और झूट की बीसों नई क़िस्में हमारे मुआशरे में पाई जाती हैं जिस पर हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी साहब ने तफ़सील से बयान फ़रमाया है। उन का वह बयान किताबी शकल में "झूट और उस की मुरव्वजा सूरतें" के नाम से छप चुका है। उस का ज़रूर मुतालआ करें और अपनी इस्लाह करें।

छटी औरत पर अज़ाब का सबब "एह्सान जतलाना"

छटी औरत जिस को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस हालत में देखा कि वह कुत्ते की शकल में है। और उस के मुंह से आग दाख़िल हो रही थी। और पाख़ाने के रास्ते से आग बाहर निकल रही थी और फ़रिश्ते दोज़ख़ के गुर्ज़ से उस की पिटाई कर रहे हैं, मार रहे हैं, उस के बारे में नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया उस औरत को यह अज़ाब दो गुनाहों की वजह से हो रहा है। एक हसद करने की वजह से और दूसरे एह्सान जतलाने की वजह से।

यह दोनों गुनाह ऐसे हैं जो मर्दों के अन्दर भी पाये जा सकते हैं, मर्द भी हसद कर सकते हैं, और एह्सान जता

सकते हैं इसलिए इस दर्द नाक अज़ाब के वे भी मुस्तहिक़ हो सकते हैं, अगर औरतें इन गुनाहों को करेंगी और तौबा नहीं करेंगी तो वे भी इस अज़ाब के अन्दर मुब्तला होंगी।

एहसान जतलाने का मलतब

एहसान जतलाने का मतलब यह है कि हमने किसी के साथ अच्छा बर्ताव किया, लेकिन जब हमारा मौक़ा आया कि हमारे साथ कोई हमदर्दी करे और एहसान करे, हमारी मदद करे उस वक़्त उस शख़्स ने हमारी मदद न की तो अब फ़ौरन यह एहसान जतलादेते हैं कि तुम्हारे मौक़े पर तो हमने तुम्हारी बड़ी ख़िदमत की, बहुत काम आये, लेकिन हमारे मौक़े पर तुम ने तोते की तरह आँखें फेर लीं। यह है एहसान जतलाना, यह बात औरतों में बहुत ही पाई जाती है। शादी ब्याह के मौक़े पर और बीमारी के मौक़े पर उनहोंने ख़िदमत करदी और उनके मौक़े पर दूसरी ने ख़िदमत न की तो अब वह औरत सारे में ढंडोरा पीटेगी, जो भी उस के पास आयेगा, उस के सामने यह जतलायेंगी कि हमने इस के साथ फ़लाँ भलाई की और फ़लाँ वक़्त मदद की, और आज जब हमारा मौक़ा आया तो उस ने हमारे साथ यह बर्ताव किया।

इस लिए मर्दों और औरतों को चाहिये कि जिस की

कोई ख़िदमत करें वह सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करें और अल्लाह तआ़ला ही से उस के सवाब की उम्मीद रखें। लिहाज़ा किसी से कोई ख़िदमत और बदले की उम्मीद ही न रखें और जब किसी से कोई उम्मीद न होगी बल्कि अल्लाह से सिर्फ़ उम्मीद होगी तो फिर वह शिकवा और गिला दिल में पैदा न होगा, घर के अन्दर भी उस की आदत रहे और घर के बाहर भी दोस्तों में भी उस की आ़दत रहे कि जो कुछ करना है सिर्फ़ अल्लाह के लिए करना है, अल्लाह तआ़ला से सवाब की उम्मीद रखें, दोस्तों, से रिश्तेदारों से बदले की कोई उम्मीद न रखें अगर वे करें तो उन का एहसान समझें अगर न करें तो अल्लाह ही पर नज़र रखें। बस इस अ़मल से इनशाअल्लाह दिल में परेशानी और तकलीफ़ पैदा न होगी।

अ़ज़ाब का दूसरा सबब "हसद करना"

इसी तरह आज कल हसद भी इतना पैदा हो गया है कि कोई शख़्स दूसरे को खाता पीता नहीं देख सकता, पहनता नहीं देख सकता, रहता नहीं देख सकता, यह हसद मर्दों में भी पाया जाता है और औ़रतों में ज़्यादा पाया जाता है। जैसे किसी के बहुत अच्छे कपड़े देखे तो दिल में हसद पैदा हो रहा है। किसी का अच्छा घर देखा तो हसद

पैदा हो रहा है। किसी को देखा कि उस की बड़ी तेज़ी से तरक़्क़ी हो रही है तो उस पर हसद हो रहा है। किसी के मनसब और ओ़हदे पर किसी की ख़ूबसूरती पर किसी की माल दारी से, किसी की सेहत मन्दी से किसी के माल व सामान से किसी की बीवी बच्चों से, ग़र्ज़ कि जितनी निअ़मतें दूसरों को हासिल हैं, उन को देख देख कर हसद पैदा हो रहा है।

"हसद" का मतलब

हसद का मतलब यह कि इन्सान दूसरे के पास कोई निअ़मत देख कर दिल में जले और यह तमन्ना करे कि उस से यह निअ़मत छिन जाये और मुझे मिल जाये यानी "ज़वाले निअ़मत की तमन्ना करना" इस का नाम हसद है। और यह गुनाहे कबीरा है। और ऐसा गुनाह है कि इस की वजह से उस औ़रत को दर्द नाक अ़ज़ाब हो रहा था जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस हदीस में बयान फ़रमाया है।

ख़ुलासा

बहर हाल यह चार गुनाह ऐसे हैं, जो मर्दों में भी पाये जाते हैं और औ़रतों में भी, एक झूट बोलना, दूसरे चुग़ली खाना तीसरे एह्सान जतलाना, चोथे हसद करना, यह चारों गुनाह ऐसे हैं जो हमारे मुआ़शरे के अन्दर आ़म हैं।

खुदा न करे ये गुनाह जिस के अन्दर हैं उस के लिए आख़िरत में भी अ़ज़ाब है। और दुनिया की ज़िन्दगी भी उस के लिए वबाल का सबब है।

इस लिए इन सब गुनाहों से तोबा करनी चाहिये और बचना चाहिये।

बहर हाल ये छः औ़रतें हैं जिनका ज़िक्र आप सल्ल० ने इस हदीस में तरतीबवार ज़िक्र फ़रमाया है और इन गुनाहों का तअ़ल्लुक़ औ़रतों से भी है और मर्दों से भी है। लिहाज़ा इन तमाम गुनाहों से औ़रतों, मर्दों सब को बचने की फ़िक्र करनी चाहिये ताकि हम दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बच सकें।

अब दुआ़ फ़रमायें कि अल्लाह तआ़ला हम सब को नेक बातों पर अ़मल करने की तोफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें। आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

टी० वी० और अज़ाबे क़बर

इस किताब में हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रऊफ़ साहब ने टी०वी० देखने के नुक़्सानात और टी०वी० के ज़रीये होने वाले गुनाहों का तफ़सील से बयान किया है इस किताब का ज़रूर मुतालआ करें और अपनी, अपनी औलाद, अपने रिश्तेदारों की इस किताब के ज़रीये इस्लाह करें।

औरतों की नमाज़

इस किताब में औरतों के लिए सुन्नत के मुताबिक़ वुज़ू और ग़ुस्ल का तरीक़ा और नमाज़ सहीह होने के लिए दूसरी ज़रूरी बातें तफ़सील से बयान की गई हैं इस किताब का मुतालआ मुसलमान औरतों के लिए बहुत ज़रूरी है।

वालिदैन के हुक़ूक़

जिस में अल्लाह तआ़ला के एहसान, माँ-बाप के एहसान, अल्लाह की ख़ुशी माँ-बाप की ख़ुशी में है, माँ-बाप के सामने उफ़ भी न करो, माँ-बाप के लिए दुआ़, माँ-बाप पर मुहब्बत की नज़र, माँ-बाप का तकलीफ़ बर्दाशत करना, और माँ-बाप के औलाद पर और औलाद के माँ-बाप पर हक़ों का तफ़सीली बयान है।

छः गुनाहगार औ़रतें

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रऊफ़ साहब सुख़रवी ने इस किताब में ऐसी छः औ़रतों का तफ़सील से बयान किया है जिन को रसूलुल्लाह सल्ल० ने दोज़ख़ के अन्दर दर्दनाक व हौलनाक अ़ज़ाब में मुब्तला देखा और उन को दोज़ख़ में अज़ाब होने की वुजूहात भी तफ़सील से बयान फ़रमाई हैं।

इस किताब का मुतालआ़ सब मुसलमानों के लिए ज़रूरी है ख़ास कर औरतों के लिए।